1857 ई० के विद्रोह से पूर्व पंजाब राज्य के प्रति ब्रिटिश नीति

डॉ० बृजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
गौरीशंकर कॉलेज,
कुतुबपुर चनौरा, फिरोजाबाद
ईमेलः drbrajeshkumar201@gmail.com

सारांश

भारतीय इतिहास में 1857 ई0 का विद्रोह बहुत ही महत्वपूर्ण घटना हैं। 1857 ई0 का विद्रोह भारतीयों के प्रति अंग्रेजों की शोषणकारी नीति का परिणाम था। 1857 ई0 के विद्रोह से पूर्व पंजाब रियासत के प्रति ब्रिटिश नीति ने सिक्खों और अन्य भारतीय रियासतो को विद्रोह के लिए प्रेरित किया। 1857 ई0 के विद्रोह से पूर्व पंजाब रियासत का शासक रणजीत सिंह था। रणजीत सिंह के युद्ध कौशल ने अंग्रजो को चिंतित कर दिया। तत्कालीन गर्वनर लार्ड वेलेजली ने तुरन्त पंजाब की ओर ध्यान दिया। लार्ड वेलेजली ने चार्ल्स मैटकॉफ को रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि के लिए वाध्य करने का आदेश दिया। इस संधि के तहत सतलज के पश्चिम का सारा पंजाब रणजीत सिंह के अधीन माना गया, बाकी भाग कम्पनी के अधीन माना गया। जहॉ के समस्त नरेश और प्रजा कम्पनी के नियंत्रण में आ गये। इसके बाद आये गर्वनर लार्ड विलियम बैन्टिग ने 1837 ई0 में रणजीत सिंह को सिन्ध पर अधिकार करने से रोक दिया, क्योकि अंग्रेज सिंध में सैनिक छावनियॉ बनाना चाहते थे। पंजाब के शासक रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद खडगसिंह शासक बना। खडगसिंह के समय लार्ड एलनवरो और लार्ड हार्डिग ने पंजाब राज्य के प्रति संघर्ष को तेज कर दिया। लार्ड हार्डिग ने कूटनीति पूर्वक सिक्ख सरदारो को अपनी ओर मिला लिया। सिक्ख सरदारो (नेताओं) के विश्वासघात के कारण चार लडाइयो मुदकी, फिरोजपुर ,अलीवाल और सुवराव में पंजाब के सिक्खो की हार हुई। इसके बाद भैरोवाल की सन्धि हुई। लेकिन सिक्ख अपने को हारा हुआ नही मानते थे। इसके पश्चात् अंग्रेजो ने शडयंत्र कर रानी जिन्दन कौर को कैद कर दिलीप सिंह को कब्जे में ले लिया। इसके पश्चात् पंजाब रियासत को 29 मार्च 1857 की घोषणा द्वारा अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया। सिक्ख जनता राजा दिलीप सिंह के साथ अंग्रजों के साथ दुव्यवहार से क्रोधित हो गयी। सिक्ख जनता अंग्रेजो के प्रति विद्रोह का अवसर तलाशने लगी, यह अवसर 1857 ई0 के विद्रोह ने दिया जिसमें पंजाब की अनेंको रियासतो ने बडचड कर भाग लिया। पंजाब राज्य के प्रति ब्रिटिश दमनकारी नीति ने या पंजाब राज्य को कूटनीति द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य मे मिलाया जाना विप्लव का विस्फोट था।

मूल बिन्दु

1857 का विद्रोह, पंजाब रियासत, अमृतसर, भैरोवाल संधि।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 14.02.2022
Approved: 10.03.2022

डॉ० बृजेश कुमार

1857 ई० के विद्रोह से पूर्व पंजाब राज्य के प्रति ब्रिटिश नीति

RJPP Oct.21-Mar.22,
Vol. XX, No. I,

pp.098-102
Article No. 11

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-1

प्रस्तावना

सन् 1857 ई0 का विद्रोह भारत में अंग्रेजी शासन काल की एक रोमांचकारी एवं महत्वपूर्ण घटना मानी जाती हैं, यह एक ऐसी प्रभावोत्पादक घटना थी जिसकी तीव्र लपटों में एक बार अंग्रेजी शासन का अस्तित्व पूर्ण रुप जलकर भस्म होता प्रतीत होने लगा था। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद से ही भारत में तीव्र विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया आरम्भ हुई थी, जिसमें कई छोटे–2 राज्यों का उदय हुआ। भारत में बक्सर युद्ध के बाद अंग्रेजो ने कुछ रियासतों को पराजित करके अंग्रेजी राज्य में मिला लिया या कई पुराने राजवंशो को उनकी गद्दी पर बैठा दिया गया था। और कही–कही अलग–अलग समझोते किये जिन्हें सहायक सन्धि के अन्तगर्त रखा गया। अतः भारत में दो प्रकार की रियासते थी– एक जिसका निमार्ण अंग्रेजो ने नही किया था जैसे– अवध, हैदराबाद, और दूसरी जिसका निमार्ण अंग्रेजो ने किया जैसे सतारा, झॉसी आदि। शोध पत्र में 1857 ई0 के विद्रोह से पूर्व पंजाब राज्य के समय उत्तर भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिटिश नीति का विश्लेषण किया गया। 19वी शताब्दी के आरम्भ में पंजाव, दिल्ली, भरतपुर, हाथरस, जैतपुर, झॉसी, फरुखाबाद, रुहेलखण्ड, बनारस, अवध, बंगाल, बिहार, उडीसा आदि प्रमुख रियासते थी। इन रियासतो के अलावा उत्तर भारत में कुछ छोटी रियासते भी थी, जैसे– अलवर, मुरसान, सिंध आदि। आंतरिक तथा बाहय मामलो मे हस्तक्षेप कर राजनैतिक प्रभाव स्थापित किया। पंजाब रियासत के प्रति ब्रिटिश नीति का अध्ययन निम्न प्रकार किया जा सकता हैं–

पंजाब राज्य के प्रति ब्रिटिश शासको की नीति

विवेच्यकाल में रणजीत सिंह पंजाब रियासत का प्रमुख शासक था। रणजीत सिंह की विजयों से अंग्रेज संशकित हो उठे थे। सर्वप्रथम लार्ड वेलेजली ने पंजाब की ओर ध्यान दिया। वेलेजली मराठो और अफगानिस्तान के बीच में पंजाब को एक स्वतन्त्र रियासत बनाये रखना चाहता था, इसलिए लार्ड वेलेजली ने रणजीत सिंह के साथ अच्छे सम्वन्ध बनाये। मैटकॉफ ने रणजीत सिंह को समझाया कि फ्रांसीसी अफगानिस्तान और पंजाब पर आक्रमण करने वाले हैं, इसलिए आपको अंग्रेजो के साथ संधि कर लेनी चाहिए। लेकिन रणजीत सिंह अंग्रजो की चाल में नही आया। सितम्वर 1803ई0 में मैटकॉफ ने रणजीत सिंह को यह सूचना स्पष्ट रुप से दी कि जिन प्रदेशो को उसने हाल में अधीन किया हें वे सभी उसे कम्पनी को देने होगे। रणजीत सिंह इससे क्रोधित हो गया। अंग्रेजो ने गॉव के कई सूवेदारो को अपनी ओर मिला लिया। बाध्य होकर रणजीत सिंह को 25 अप्रेल को अमृतसर की संधि करनी पडी। संधि के अनुसार सतलज के पश्चिम का सारा पंजाब रणजीत सिंह के अधीन माना गया। सतलज और यमुना के बीच के थोडे से प्रदेश को छोड कर बाकी सब कम्पनी के अधीन माना लिया गया। वहॉ के समस्त देशी नरेश और उनकी प्रजा कम्पनी के हाथों सौप दिये गये।

सन् 1831 ई0 में लार्ड बिलियम बैटिंग ने रणजीत सिंह से रोपड नामक स्थान पर भेंट की और कहॉ कि अग्रेज सिंधु नदी के हिस्से पर अपना कब्जा करना चाहते है। इसलिए उसके किनारे अपनी छावनियॉ बनाना चाहते है। रणजीत सिंह जो स्वयं सिंधु पर अपना प्रभुत्व चाहता था, परन्तु अंग्रेजो ने उसे आक्रमण करने से रोक दिया। रणजीत सिंह को सिंध विजय से रोकने के लिए अंग्रेजो ने हर तरफ से छल, कपट और बहाने बाजी का उपयोग किया।[1]

सन् 1839 ई0 में रणजीत सिंह की मृत्यु हो गयी। उसका पुत्र खडग सिंह पंजाब का शासक बना। लेकिन गद्दी पर बैठते ही संघर्ष होने लगा, शासको की हत्या की जाने लगी। इसी समय लार्ड एलनवरो ने सिक्खो के साथ युद्ध करने की तैयारी कर ली थी, इसी बीच उसे इग्लैण्ड को बुला लिया गया। उसके स्थान पर हेनरी हार्डिग को समस्त भारत का गर्वनर जनरल बनाकर भेजा गया। हार्डिंग ने पंजाब से युद्ध की तैयारी प्रारम्भ कर दी। इसके लिए उसने मेजर ब्राडफुट को पंजाब पर आक्रमण करने का काम सोपा और पुल बाधने के लिए 1845 ई0 में नावे फिरोजपुर की और रवाना कर दी। उन नावों की हिफाजत के लिए उसने फिरोजपुर तक सिपाहियो की एक टुकडी भेजी।

निःसन्देह ब्राडफुट किसी तरह सिक्खो को भडकाकर उनकी तरफ से युद्ध करना चाहता था। महाराज दिलीप सिहं, उसकी मॉ रानी झिन्दन कौर शासन कार्य चलाती थी। महारानी के दो प्रमुख व्यक्ति थे लाल सिंह और तेज सिंह, तेज सिंह सेना का प्रधान सेनापति था वह धन के लोभ में अंग्रेजो से मिल गया था। तीसरे देशद्रोही जम्बू के राजा गुंलाब सिंह को भी अंग्रेजो ने कश्मीर का राज्य देने का वायदा करके अपनी तरफ मिला लिया था। इन लोगो ने सिक्ख सेना भडकाई और 1857 ई0 में अंग्रेजी सीमा पर आक्रमण करवा दिया। इसमे चार लडाइयॉ विभिन्न स्थानो पर (मुदकी, फिरोजपुर, अलीवाल और सुवराव) हुयी, जिसमे सिक्ख अपने नेताओ के विश्वासघात के कारण बुरी तरह पराजित हुए। अतः 9 मार्च 1846 ई0 को भैरोवाल की संधि हो गयी, संधि के पश्चात भी पंजाब में असंतोश फैला हुआ था। सिक्ख अपने को हारा हुआ नहीं समझते थे। ''सिक्ख सेना को अपराजित अभिमान अपनी पहली–पहली हार को हजम नहीं कर सका।''[3] यहीं नही रानी झिन्दन कौर को शेखपुर के महल में कैद कर लिया गया था तथा उसके पुत्र दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने अपने कब्जे में कर लिया जिससे कि सिक्ख सिपाही आवेश में चिल्लाने लगे कि ''महारानी को कैद कर लिया और बालक को अंग्रेजो ने अपने अधिकार में कर लिया, अब हम किसके लिये लडें और किसके झण्डे के नीचे जमा हों।

ब्रिटिश रेजीडेण्ट करी ने राज्य के हर विभाग में देशी अफसरों को हटाकर अंग्रेज नौकर रखने शुरू कर दिये, जिससे प्रजा में यह भावना फैल गयी कि सारा पंजाब राज्य अंग्रेजी राज्य में मिला लिया जायेगा। यह जानकर प्रजा में असंतोष फैल गया। ''इस प्रकार सारा पंजाब बारूद का घर बना हुआ था एक चिनगारी की आवश्यकता थी और यह चिंगारी मुल्तान शहर ने दे दी।[4]

रणजीत सिंह ने मुल्तान को सन् 1818 में जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया था और दीवान सावनमल को वहॉ का शासक नियुक्त किया। उसकी वार्षिक आमदनी 35 लाख रूपया थी जिसमें में साढ़े सत्रह लाख रूपये वार्षिक लाहौर के खजाने में जमा करवाने पड़ते थे। 1844 ई0 में सावनमल की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र मूलराज मुल्तान का दीवान बना। उस समय लाल सिंह पंजाब का सर्वेसर्वा था। उसने मूलराज सें गद्दी पर बैठने के 25 लाख भैट मांगी। दीवान मूलराज ने 3 वर्ष में इस रकम को चुकाने का वादा किया। इसी बीच प्रथम सिक्ख युद्ध आरम्भ हो गया। इसके बाद पंजाब का वास्तविक अधिकार अंग्रेजों के हाथ में आ गया। अतः मूलराज ने विदेश शत्रुओं को इतनी बडी रकम देना उचित नहीं समझा।

युद्ध के पश्चात मूलराज ने लाहौर जाकर हिसाब स्पष्ट कर दिया और वापिस लौट आया, लेकिन अंग्रेज यह चाहते थे कि वह त्यागपत्र दे दे। इसलिये उनहोने उस पर तरह–तरह के आरोप

लगाने शुरू कर दिये तथा प्रांत में शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए मूलराज की सहायता के लिए जबरदस्ती दो अंग्रेज कमिश्नर, नौ कलैक्टर और सात अंग्रेज जज मुल्तान भेजे।''[5]

19 अप्रैल 1848 ई0 को मूलराज को दीवान पद से हटा दिया गया, उसकी मुल्तानी सेना भंग कर दी गयी लेकिन सैनिकों से यह नहीं देखा गया और 20 अप्रैल 1848 ई0 को मुल्तान में सैनिक क्रांति हो गयी। काहन सिंह बंदी बना लिया गया और एग्नियू तथा उसका सहायक एंडक्सन मारे गये।[6] यहीं से बढकर विद्रोह सारे पंजाब में फैल गया। अंग्रेजों ने इस बार पंजाब और सीमा प्रांतों के मुसलमानों को सिक्खो के विरूद्ध भड़काया।

सिक्ख सेनापति शेर सिंह के पिता चतर सिंह हरीपुर में रहते थे। उनके चारों तरफ मुसलमानों की बस्ती थी। अतः कप्तान एबर ने इन लोगों को उकसाया और पंजाब में पुनः मुसलमानों को राज्य कार्य वापिस दिलाने का प्रलोभन दिया। मुसलमानों ने 6 अगस्त 1848 ई0 को हरीपुर दुर्ग पर आक्रमण कर दिया। चतर सिंह ने वीरता से युद्ध किया और मुसलमानों को मार भगाया।

परिणाम अंग्रेजों के पक्ष में रहा। खालसा सेना ने हथियार डाल दिये। अन्त में शेर सिंह ने भी आत्म समपर्ण कर दिया।

लार्ड डलहौजी ने अपने उत्तरदायित्व पर सारे पंजाब को 29 मार्च 1849 ई0 की घोषणा के द्वारा अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। राजा दिलीप सिंह को गद्दी से उतारकर इग्लैण्ड भेज दिया गया जहां पर उसे एक जागीर दे दी गयी। उसे अंग्रेजी शिक्षा दी गयी और कुछ दिन पश्चात् इसाई धर्म ग्रहण करने के पश्चात दिलीप सिंह का विवाह एक अंग्रेज लडकी से कर दिया गया। इस प्रकार रणजीत सिंह वंश समाप्त हो गया।

निष्कर्ष

लार्ड डलहौजी के पंजाब को अंग्रेजी राज्य में मिलाये जाने के कार्य ने चारों ओर असंतोष को भड़का दिया था। ''सत्य तो यह है कि उसने पंजाब को अंग्रेजी राज्य में मिलाकर देशव्यापी असंतोष को विद्रोह में बदल दिया। पंजाब को अंग्रेजी राज्य में मिलाना सशस्त्र विश्वासघात था।[7]

दूसरी ओर रेजीडेण्ट करी ने लाहौर दरवार पर दबाब डाला कि दरबार की सेना भेजकर मूलराज को दण्ड दिया जाये। शेर सिंह को भी एडवर्ड के साथ भेजा, शेर सिंह को जब यह समाचार मिला कि उसके पिता चतर सिंह को फिर से घेर लिया है तो उसने एडवर्ड का साथ छोड़ दिया, अंग्रेजी सेना हार गयी और एडवर्ड को जान बचाकर भागना पड़ा। शेर सिंह मूलराज से जा मिला और सेना लेकर हरीपुर की रक्षा करने पंजाब में आगे बढ़ा। विद्रोही शेर सिंह को सेना सहित आते देखकर अंग्रेजों ने इसे आक्रमण समझा ओर उन्होने सिक्खों के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

शेर सिंह और मूलराज में अंग्रेजों ने फूट डलवा कर दोनों को अलग कर दिया। इससे मूलराज की शक्ति घट गयी और अंग्रेजों का कार्य सरल हो गया। यह युद्ध चार स्थानों पर लडा गया। इन सभी युद्धों में सिक्ख सेना बडी वीरता से लडी लेकिन नेतृत्व के अभाव में उनका मोर्चा टूट गया। सिक्ख सेना मैदान छोड़कर भाग गयी। राजा दिलीप सिंह के प्रति किये गये दुर्व्यवहार ने सम्पूर्ण सिक्ख जनता को क्रोधित कर दिया था। यही कारण है कि जब सन् 1857 ई0 का विद्रोह प्रारम्भ हुआ तो पंजाब की अनेक रिसायते जैसे फिरोजपुर लुधियाना, जालधर, फिलोर आदि इस विद्रोह में सम्मिलित हो गयी। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाया जाना भी विप्लव का विस्फोट था।

सन्दर्भ

1. कैप्टन कनिंघम, एच. एस. (1918). *ए हिस्ट्री आफ सिक्ख.* अध्याय–vii आक्सफोर्डः **पृष्ठ 39.**
2. वही0 **पृष्ठ 135.**
3. रेमजे, म्योर. *द मैकिंग ऑफ द ब्रिटिश इंडिया.* **पृष्ठ 339.**
4. डाडवैल. *6 कैब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया,* खण्ड–पंचम, **पृष्ठ 348.**
5. रेमजे, म्योर. *द मैकिंग अभद ब्रिटिश इण्डिया.* **पृष्ठ 339.**
6. इलियट. *नोट्स ऑन द रिवेन्यूज एण्ड रिसोर्सिज ऑफ द पंजाब.* **पृष्ठ 41.**
7. हजरत. **पृष्ठ 151.**